# Lectur No:- 23

Topic—

(1) Yoga,

Dr. Surita Kumari
Department of,
Philosophy.
B.A Part I Paper-I
A.N.D College Shahpur
Patory, Samastipur,

Ans:- पतंजलि को योग दर्शन का प्रणेता माना जाता है। इन्हीं के नाम पर दर्शन को पातंजल दर्शन भी कहा जाता है। योग अन्य दर्शनों की भाँति मोक्ष की प्राप्ति

को जीवन का चरम लक्ष्य मानता है।

यहाँ मोक्ष की प्राप्ति के लिए विवेक को ही पर्याप्त नहीं माना गया है बल्कि योगाभ्यास पर भी बल दिया गया है। योगाभ्यास पर जोड़ देना इस दर्शन की खास विशेषता है। इस प्रकार योगदर्शन में व्यवहारिक पक्ष अत्यधिक प्रधान है। योगदर्शन यद्यपि योगदर्शन

P.T.O.

प्रणेता पतंजलि को माना जाता है लेकिन योग दर्शन अपने विशृंखलित रूप में वेदों, उपनिषदों और सूत्रों में भी प्राप्त होता है। योग दर्शन पतंजलि की कोई स्वतंत्र या मौलिक कृति नहीं अपितु भारतीय दर्शन की अत्यंत प्राचीन और समृद्ध संपत्ति है। पतंजलि ने इसी सामग्री को एकत्रित करके उसे अपने मौलिक विचारों में सजाकर व्यवस्थित रूप दिया है।

सांख्य और योग दर्शन में अत्यंत ही निकटता का संबंध है। जिसके कारण दोनों दर्शनों को समानतंत्र (Allied systems) कहा जाता है। सांख्य के तत्व विचार का व्यवहारिक प्रयोग योग है। योग दर्शन सांख्य की तरह द्वैतवादी है। सांख्य के तत्वशास्त्र को वह पूर्णतः मानता है। सांख्य में पतंजलि का प्रमुख स्थान माना जाता है। योगदर्शन के

P.T.O.

पतंजलि को प्रणेता इसीलिए माना जाता है। समान तंत्र (Allied systems) कहा जाता है। सांख्य के तत्व विचार का व्यवहारिक प्रयोग योग है।

योग यद्यपि दर्शन सांख्य की तरह द्वैतवादी है। सांख्य के तत्वशास्त्र को वह पूर्णतः मानता है।

सांख्य के अनुसार तत्वों की संख्या (पच्चीस) है। योग दर्शन इन

तत्वों में एक तत्व ईश्वर को जोड़ देता है, इसलिए योग दर्शन को सांख्य कहा जाता है। योग (Yoga of Philosophy) योगदर्शन में पतंजली का महत्वपूर्ण स्थान इसलिए माना है। योग दर्शन में पतंजली का प्रमुख स्थान है इसलिए माना जाता है।

सांख्य के तत्वशास्त्र को पूर्णतः मानता है। सांख्य के अनुसार योग दर्शन तत्वों में एक तत्व ईश्वर को मानता है) जोड़ देता है। इसलिए योगदर्शन को ईश्वर सांख्य कहा जाता है।

ET.C.O.E.ND